शशि का सकल ब्रह्माण्ड में।
कोई एक न स्थान।।
करना सेवा असहाय की।
ईश्वर दर्शन मान।4।

भंगेड़ी भांग, हाकिम–हुक्म।
बाल–हठ बाल–नादान।।
पूरा करना है कठिन।
अनुभव का यह ज्ञान।5।

सदा रहेंगे इस धरा पर।
लोभी जिद्दी और किसान।।
चिन्ता सन्तति के प्रति।
मात–पिता की जान।6।

तामस, राजस, सतोगुण।
बतलाये गुण तीन।।
त्याग न सकता नर इन्हें।
इसमें मेख ना मीन।7।

नेता गये डकार धन।
ले चटोर चटकार।।
आदत छूट ना सके कभी।
और पुलिस फटकार।8।

माथे में न अक्लहो।
बातों में नहीं दम।।
शक्ति रहित हाथ–पैर।
कलह करे हरदम।9।

अपनी गलती से काम बिगारे।
दूजे को दोषी ठहराना।।
नाच न सकता व्यक्ति खुद जब।
'आंगन टेढ़ा' करे बहाना।10।

मौत, बीमारी, भूख–प्यास ये।
हर मानव को सदा सताते।।
जैसे आती धूप–छांव है।
त्यूंही सुख–दुःख आते जाते।11।

हो नर–नारी में मत भिन्नता।
एक कुटुम्ब–परिवार के बीच।।
उस घर का है नाश सुनिश्चित।
वहाँ आपसी रहती खींच।12।

नहीं भुलाया जा सकता है।
लिया किसी से अगर उधार।।
मन से लिया जो नाम राम का।
कर देता भवसागर पार।13।

माँ की आशीष, बाप का कर्जा।
औ नारी का सेवा भाव।।
इनका बदला चूक न सकता।
कितना कोई करे उपाय।14।

मन का भ्रम, रोग शक्कर का।
और ब्याह का भारी चाव।।
नहीं कभी भी मिट सकत हैं।
चाहे जितना करो उपाय।15।

धन के अर्जन हेत हम।
खो देते हैं चैन।।
चैन मिले ना देह को।
धन खर्चो दिन रैन।28।

बाल–नारी अरू राजहठ।
भूखे नर की जिद्द।।
पूरी गर ना हो सके।
तो मच जाता जुद्ध।29।

बिना सहारे ना टिकै।
नारी बेल समान।।
प्रकृति का यह नियम लो।
भली–भांति पहचान।30।

कच्चा सूत, पूत मक्कार।
फटी जूतियां, भूत।।
कोई काम ना आ सकते हैं।
मिलते इसके हमें सबूत।31।

उम्र साठ की जब हुई।
अक्ल जाती है नाट।।
जिम्मेदारी सौंप दो।
बात बांध लो गांठ।32।

रिश्ते–नातों के सुनो।
होते चार आधार।।
जन्म–मरण कर्म गर्ज।
ना बदल सकोगे यार।33।

कोरी बातों से होता है।
कात्या सूत कपास।।
काम करण सैं होवेगो।
छोड़ बात की आस।34।

काम सजे वह ही करे।
दूजा देय बिगाड़।।
अपना काम खुद ही करें।
ना करें कभी जुगाड़।35।

हरड़, भरड़, आंवला औ।
चौथी नीम गिलोय।।
कूट छान कर फांक लो।
कब्ज कभी ना होय।36।

लड़ी फिरंगी से वह डटकर।
झांसी की लक्ष्मी बाई।।
खट्टे दांत किए वीरों के।
लड़कर वीरगति पाई।37।

कुतिया ब्यावै पोली मांहि।
बाड़ा बीच में गाय।।
दूध की जरूरत जब पड़ै।
आती वहां काम है गाय।38।

बकरा की माँ खैर चोर।
कब तक करे बचाव।।
टले न विधि का लेख।
करलो कितना ही रख रखाव।39।

जिसके मर गए बादशाह।
डांवा–डोल वजीर।।
मालिक बिन घर ना बसैं।
कितनी करो तदबीर।52।

कहती बहू सपूत से।
बोलत मीठा बोल।।
दमड़ी खर्च करे नहीं।
फिर काहे का मोल।53।

घर आये पतिदेव जब।
ना विष में घोले बोल।।
पुनः मोर्चे जा मरे।
घर होग्या डांवा–डोल।54।

रूखी–सूखी खाय कर।
ठण्डा पानी पी।।
कठिन हो जायेगा चुकाना।
गर उधार कोई ली।55।

खुश हों नेता वोटों से।
दामों से खुश सेठ।।
बदमाशों का गुर डांग है।
अफसर दबै, ले भेंट।56।

पाव खाण्ड है पास में।
लेने वाले पचास।।
माथा देख टीका करै।
समझ आपनों खास।57।

रावण जी की बात का।
सुनलो आप निचोड़।।
जीना मरना शान से।
कुल धर्म ना छोड़।58।

काली बदली देखकर।
आलस्य छोड़ो जाट।।
बोओ बीज मोती उगै।
हो जायेंगे ठाठ।59।

नई दुल्हन ससुराल में।
और बच्चों को चटशाल।।
दिक्कत हो शुरूआत मैं।
यदि पहले की ठाल।60।

ठाकुर छोड़ी ठाकरी।
ली सरपंचा अपनाय।।
चुनाव हारकर मंत्री भी।
घर मैं ही रह जांय।61।

नई पीढ़ी की उपज यह।
प्रगति करती जाय।।
सारी धरती नाप कर।
अन्तरिक्ष दिया दिखाय।62।

घर में जिसको ठोड़ ना।
बाहर कहीं ना ठोड़।।
पाहुन हो मत बोझ बन।
अपना घर ना छोड़।63।

खुद की नजर से गिर गये।
तो समझौ बस मौत।।
गिर औलाद की नजर से।
मत दे देना पोत।76।

बहिन आई, मां–बाप मिल।
हुआ बड़ा उछाव।।
पर सहेलियों से मिलन।
नणद करे अटकाव।77।

भूखे को रोटी की चाहत।
प्यासे को चाहिए पानी।।
धर्मनीति की बातें थोथी।
करना केवल बेईमानी।78।

लज्जा है नारी का गहना।
घर–संसार पति की सेवा।।
करवा चौथ व गवरी पूजा।
सेवा से ही मिलता मेवा।79।

चार अवसर होते हैं ऐसे।
सवामणी का रहा विधान।।
रोजगार विवाह का अवसर।
संतान जन्म और सम्मान।80।

भगवान के तीन रूप हैं।
नारी स्वरूपा देवी तीन।।
जन्म–पालक और संहारक।
ईश्वर के सब हैं आधीन।81।

व्यंग्य बींण जिठानी के।
और सासू की सुन फटकार।।
पति भटकता पर नारी को।
बेबस पत्नी करे पुकार।82।

मुखिया मुख सो चाहिये।
करै समान व्यवहार।।
माता तो ममतामयी।
सबको करती प्यार।83।

राम–राम के जाप के।
करो राम के काम।।
जीव–जन्तु इस जगत के।
जोहते बाट तमाम।84।

यदि नर की सेवा करो।
नारायण खुद आ जाय।।
सेवा सर्वोत्तम भक्ति है।
नारायण को भाय।85।

नकटी है माया बड़ी।
मन में गर बस जाए।।
लाख जतन कोई करै।
तो भी यह ना जाय।86।

नशा दारू और भांग का।
चढ़ै और छूट जाय।।
नशा भक्ति का जो चढ़ा।
कभी उतर ना पाए।87।

यौवन छाई पद्मिनी, रख मरोड़।
दे सब रिश्ते छोड़।।
यौवन ढ़ल जब जायेगा।
मिल ना पावे जोड़।100।

नभ छूने की गर चाह तो।
सीधी सी है राह।।
ऊपर देखो, नीचे नहीं।
पूरी होगी चाह।1101।

नाग करत दुग्ध–पान है।
होता है सम्मान।।
जीव केंचुआ, मिट्टी खाकर।
सहता है अपमान।102।

सुनो ध्यान से मर्द सब।
दो नारी से हेत।।
जीवन संकट से घिरे।
बता रहा हूँ भेद।103।

अक्ल से धन होत है।
अक्ल से पहचान।।
बिन अक्ल, भूखे मरत।
वे सब हैं नादान।104।

बड़ी बुराई दहेज है।
लो तुम इसको मान।।
अदालत के चक्कर लगें।
फीकी पड़ती शान।105।

अलग–अलग हो मत अगर।
नहीं गलेगी दाल।।
ब्याह हुआ बेमेल तो।
हो तलाक तत्काल।106।

डालर अर्जन जो करें।
संग जापानी नार।।
भोंगे छप्पन भोग जो।
सुख सम्पत्ति अपार107।

सौ बीघा ठाकुर रखे।
नौ जाट, माली दोय।।
बिन खेती खलिहान में।
मौज करत है कोय।108।

अधूरा ज्ञान किताब का।
पूरा अनुभव ज्ञान।।
बिन गुरू शिष्य, नैन बिन काँच।
हो जाते हैं बेजान।109।

ज्ञान ना होता रटन से।
कम्प्यूटर ना ज्योति।।
राम–राम तोता रटे।
मुक्ति न इससे होत।110।

फूल रंग खुशबू बिना।
समझो है बेकार।।
मूल्य है शक्ति, बुद्धि का।
सब बातों का सार।111।

राज चलावै एस.पी.।
जिला कलेक्टर साथ।।
थाना, तहसील, डी.एस.पी.।
ये तो सभी अनाथ।124।

धन और धर्म, दोउ की।
सब को रहती चाह।।
धर्म बचे, धन भी बचे।
धर्म ही असली बांह।125।

धन हराम का जाएगा।
नहीं बचेगा तात्।।
मेहनत करके धन कमा।
देगा सुख दिन–रात।126।

मेहनत जो करता नहीं।
होता वह मक्कार।।
कौन भला उससे करे।
रोटी–बेटी व्यवहार।127।

जी भर के संग्रह करो।
साथ छदाम न जाए।।
अंतकाल जाते समय।
कफन यहीं जल जाए।128।

प्राणों से बढ़ देश है।
जो रखते यह ध्यान।।
देश हेतु बलिदान दें।
सादर उन्हें प्रणाम।129।

मायड़ भाषा है भली।
अपनी है पहचान।।
बोल सहज लिखना कठिन।
करो इसी का गान।130।

झूठा बाहरी आवरण।
सच्चा अन्तर माल।।
दूध भरी हांडी भली।
विष–स्वर्ण पाय जंजाल।131।

बेटा करे बाप का काम।
बहू रखै सास का ध्यान।।
सास–बहु की मिले कुण्डली।
सुख शान्ति का अवदान।132।

राम–रहीम कुछ भी कहो।
सब का मालिक एक।।
जब होवे उसकी कृपा।
रह सकती है टेक।133।

धन अर्जन सबसे सरल।
पढ़ना कठिन है काज।।
मेहनत सबसे कठिन है।
मेहनत पर हो नाज।134।

तन–मन–सुख झूठे सभी।
झूठे मान–सम्मान।।
निर्मोही बन के जीओ।
कहते वेद–पुराण।135।

चंदन वृक्ष से लिपटती।
देखो नागर बेल।।
ढ़ोला–मारू गुण मिलै।
प्रकृति का यह खेल।148।

आरक्षण का मच रहा।
कितना भारी शोर।।
बंदर बांट अब हो रही।
नहीं किसी का जोर।149।

आय बुढ़ापा जाये ना।
जाय जवानी बीत।।
समय रहत कुछ ना किया।
जीवन–रस जा रीत।150।

ठोकर खा संभले नहीं।
उसको है धिक्कार।।
हिय की आँखें फूटगी।
हो जीवन बेकार।151।

सबके सब नेता बने।
अन्नदाता ना कोय।।
ईंट नींव की जो बने।
धन्य भाग्य वे होय।152।

शरमाता चंदा छिपा।
बादल की ले ओट।।
छिप–छिप चांद निहारता।
सुन्दर मुखी अबोध।153।

केवल सपने में रहे।
शिष्टाचार संस्कार।।
पलट गया युग दोस्तो।
हम भी हैं लाचार।154।

टेढ़े से सीधा मिले।
मेल यह बेमेल।।
दो टेढ़े जब आ मिलें।
बिगड़ जाय सब खेलें।155।

बीच सरकारी महकमां।
सफल चतुर चालाक।।
हंसों की कोई पूछ ना।
पूजे जाते काक।156।

मात–पिता भी बंट गये।
दो भाइयों के बीच।।
दो दिल जब बंट जात हैं।
हो जाती है भींच।157।

खाने को दाना नहीं।
फिर भी घर पर नाज।।
शर्म न करती रूपसी।
बेच आपनी लाज।158।

नरक न कोई चाहता।
चाहते स्वर्ग तमाम।।
कर्म आयेंगे काम सब।
शुभ से ऊँचा नाम।159।

घिर आई काली घटा।
बरसेगी बरसात।।
गाजै वे बरसै नहीं।
सच मानो तुम बात।172।

जिसका जैसा स्वभाव है।
बदल न सकता नेक।।
जाता उसके साथ है।
आँख पसारकर देख।173।

अपना समझकर बरतना।
दूजे का धन–माल।।
अमानत दूजे की सदा।
रखना सदा संभाल।174।

अन्तर करना कभी नहीं।
करनी–कथनी बीच।।
जिसका चरित्र है दोगला।
वह होता है नीच।175।

बुरा समय जब घेर ले।
होता सब विपरीत।।
भैंस मरै, नारी मरै।
चलती आई रीत।176।

खान–पान व्यवहार में।
लज्जा देना छोड़।।
पारीक तेरे कथन का।
नहीं है कोई तोड़।177।

भूखे पेट न हो भजन।
यह है सच्ची बात।।
बिन पैसे के पैरवी।
किसकी है औकात।178।

खोटा धन खोटा मनुज।
कभी न देते लाभ।।
खोटे धन से लाभ का।
देखे कोई न ख्वाब।179।

बनिया मीत ना हो सके।
वैश्या करे ना प्रीत।।
इन दोनों को दोस्तो।
नहीं सकोगे जीत।180।

पैसा नहीं भगवान पर।
यह साधे सब काम।।
बुरे समय ही के लिए।
रख अंटी में दाम।181।

जनता गाड़ीबैल है।
उसका कुछ ना दोष।।
वह तो बाल अबोध है।
सहती रहती धौंस।182।

खेती जाट को सोहती।
बणिया सोहे हाट।।
इससे हो उलटा अगर।
समझो सम्पट–पाट।183।

वर होवे इक्कीस का।
और अठारह नार।।
यह कहता कानून है।
और स्वस्थ आधार।196।

भोंके वे काटे नहीं।
गरजे न हो बरसात।।
थोथे चने बजते घने।
यह है सच्ची बात।197।

आया था हरि भजन को।
ओटन लगा कपास।।
नहर–नहर करते रहो।
नहीं मिटेगी प्यास।198।

नहीं रहा है दोस्तों।
भोलों का भगवान।।
भोलों से भगवान को।
लिया छीन धनवान।199।

बैर भाव को छोड़ दो।
छोड़ आपसी रीस।।
नींद, चैन खो जायेंगे।
मन में रहेगी टीस।200।

बाल हुए सफेद सब।
आँख हुई निस्तेज।।
बत्तीसी हिलने लगी।
छोड़ राज का नेह।201।

गीता गाई कृष्ण ने।
सार–सार से युक्त।।
शास्त्र पुराण विस्तार हैं।
गीता पढ़ हो मुक्त।202।

निकसा कृष्ण भगवान मुख।
गीता ग्रन्थ महान।।
पढ़े जो मन और वचन से।
हो उसका कल्याण।203।

ध्यान लगाकर जो करे।
गीता जी का जाप।।
शोक, रोग, भय दूर हों।
कट जावें सब पाप।204।

उपनिषद् दुधारू गाय हैं।
सब दूहे दूध गोपाल।।
गीता खीर अमृत जिसे।
पी के होय निहाल।205।

वेद–पुराण शास्त्र सभी।
गीता का ही सार।।
पढ़–पढ़ पुस्तक जग मरा।
पर हुए न भव से पार।206।

गीता को गुरु मानिए।
गीता ही गुरु–ग्रन्थ।।
गीता दान जो नर करै।
जाय विष्णु के पंथ।207।